

बाजार और मूल्य अस्थिरता: किसानों के लिए बढ़ती समस्या

संदीप चौहान व योगेश कुमार

कृषि विज्ञान केन्द्र, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक

भारतीय कृषि में “बाजार और मूल्य अस्थिरता” आज सबसे गंभीर और चर्चित समस्याओं में से एक है। किसान पूरी मेहनत से फसल उगाता है, परंतु कटाई के समय बाजार में अत्यधिक उतार-चढ़ाव उसकी आय को सीधा प्रभावित करता है। कई बार उत्पादन अच्छा होता है, लेकिन कीमतें गिरने से किसान को घाटा उठाना पड़ता है। यह समस्या विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों के लिए अधिक कठिनाइयाँ पैदा करती है।

मूल्य अस्थिरता क्यों बढ़ रही है

1. मांग और आपूर्ति में असंतुलन

कई बार एक सीजन में किसी फसल का अधिक उत्पादन हो जाता है, जिससे बाजार में उसकी कीमत गिर जाती है। अगले वर्ष किसान उस फसल की बुवाई कम कर देते हैं, तो कीमत बढ़ जाती है। यह चक्र निरंतर चलता रहता है।

2. उपयुक्त भंडारण और प्रसंस्करण सुविधाओं की कमी

ग्रामीण क्षेत्रों में कोल्ड स्टोरेज और वेयरहाउस सीमित होने से किसान मजबूर होकर अपनी उपज तुरंत बेच देता है, जिससे बड़े व्यापारी कम कीमत देते हैं।

3. मंडियों का सीमित पहुँच और बिचौलियों की भूमिका

कई किसान सीधे बाजार तक नहीं पहुँच पाते और उन्हें बिचौलियों के माध्यम से बेचना पड़ता है। इससे उन्हें सही दाम नहीं मिलते।

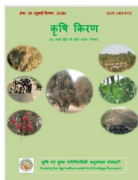
4. वैश्विक बाजार का प्रभाव

तेलहन, मसाले, दालें, कपास जैसी फसलें अंतरराष्ट्रीय बाजार से प्रभावित होती हैं। कई बार वैश्विक कीमतें गिरने से स्थानीय कीमतों में भी गिरावट आती है।

5. मौसम और आपदा का बढ़ता जोखिम

बाढ़, सूखा, ओलावृष्टि, अनियमित बारिश जैसी आपदाएँ आपूर्ति श्रृंखला को प्रभावित करती हैं, जिससे बाजार कीमतों में तेज उतार-चढ़ाव होता है।

6. कृषि उत्पादों की मांग का बदलता स्वरूप



खपत पैटर्न बदलने से अचानक किसी वस्तु की मांग बढ़ या घट जाती है। इससे कीमतें प्रभावित होती हैं।

किसानों पर इसके प्रभाव

1. आय में अनिश्चितता

किसान यह तय नहीं कर पाता कि उसे कितनी आय मिलेगी। इससे खेती जोखिम भरा व्यवसाय बन जाता है।

2. उत्पादन लागत पूरी न होना

बीज, खाद, डीजल आदि की लागत बढ़ती जा रही है, लेकिन मूल्य अस्थिरता के कारण उत्पाद बेचते समय किसान को लागत से कम दाम मिल जाते हैं।

3. कर्ज का बोझ बढ़ना

आय कम होने से किसानों को नए सीजन के लिए कर्ज लेना पड़ता है, जिससे आर्थिक दबाव बढ़ता है।

4. खेती से मोहभंग

लगातार घाटे से युवा पीढ़ी कृषि से दूर होती जा रही है और कृषि में निवेश कम हो रहा है।

5. सामाजिक-आर्थिक असुरक्षा

मूल्य अस्थिरता से परिवार की शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक गतिविधियों पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

समस्या के समाधान

1. MSP का दायरा बढ़ाना

प्रमुख फसलों के अलावा दलहन, तिलहन और बागवानी फसलों को भी प्रभावी MSP और सरकारी खरीद का लाभ मिलना चाहिए।

2. किसान उत्पादक संगठन (FPOs) मजबूत करना

सामूहिक विपणन से किसानों की मोलभाव करने की शक्ति बढ़ेगी और उन्हें बेहतर दाम मिलेंगे।

3. e-NAM और डिजिटल प्लेटफॉर्म का विस्तार

ऑनलाइन बाजार से किसान को अधिक खरीदार मिलेंगे और पारदर्शिता बढ़ेगी।

4. मूल्य स्थिरीकरण कोष

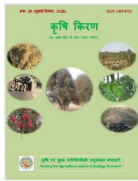
सरकार को उतार-चढ़ाव वाले उत्पादों के लिए मूल्य स्थिरीकरण तंत्र को और मजबूत करना चाहिए।

5. कोल्ड स्टोरेज, वेयरहाउस, और प्रसंस्करण उद्योग

ग्रामीण स्तर पर भंडारण सुविधाओं और छोटे प्रोसेसिंग यूनिट्स से किसान जल्दी बेचने की मजबूरी से बचेंगे।

6. कृषि बीमा योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन

आपदा व फसल जोखिम से होने वाली अनिश्चितता को कम किया जा सकता है।



7. किसान को बाजार उन्मुख प्रशिक्षण

KVK, कृषि विभाग और विशेषज्ञ संस्थान किसानों को मूल्य श्रृंखला, ग्रेडिंग, पैकिंग, मार्केट लिंकेज और उत्पाद योजना का प्रशिक्षण दें

निष्कर्ष

बाजार और मूल्य अस्थिरता आज किसानों के आर्थिक स्थिति को सबसे अधिक प्रभावित

करने वाली समस्या बन गई है। किसान तभी सशक्त बन सकता है, जब उसे अपनी फसल का उचित, स्थिर और सुनिश्चित मूल्य मिले। इसके लिए सरकार, कृषि वैज्ञानिक, बाजार विशेषज्ञ और किसान-सभी को मिलकर काम करना होगा। स्थिर, पारदर्शी और किसान-हितैषी बाजार व्यवस्था ही कृषि को लाभकारी बना सकती है।